Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 18, Issue No. 6, October-2021, ISSN 2230-7540

सड़क पर रहने वाले बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति का आकलन

Dr. (Smt.) Anita Singh[1]* Dr. Kamlesh Singh[2]

[1] Principal, KMV Inter College, Sewapuri, Varanasi (UP)

[2] Associate Professor, Department of A.H & Dairying, KAPG College, Prayagraj (UP)

सार – सड़क के बच्चे वे बच्चे हैं, जो कई सामाजिक-आर्थिक कारणों से, खुद से एक शहर या शहर की सड़कों पर रहते हैं। वे बढ़ती गरीबी और बेरोजगारी, परिवारों के बढ़ते प्रवासन और टूटे हुए परिवारों की उपेक्षा का परिणाम हैं। दुर्व्यवहार और हिंसा, प्राकृतिक और मानव निर्मित आपदा, ग्रामीण क्षेत्रों में घटते संसाधन और शहरों का आकर्षण पर्याप्त भोजन, कपड़े, चिकित्सा देखभाल, शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, पोषण संबंधी जागरूकता उनकी उत्पत्ति के कारण हैं और स्वच्छ वातावरण की कमी के कारण, बच्चे स्वास्थ्य समस्या और त्वचा संक्रमण सहित विभिन्न पोषक तत्वों की कमी वाली बीमारियों से पीड़ित हैं। वर्णनात्मक अध्ययन में 18 वर्ष तक के बच्चों ने भाग लिया। बच्चों को दस विधानसभा क्षेत्रों से लिया गया था। 540 स्ट्रीट सी में से बच्चे, 331 (61.29%) लड़के थे और 209 (38.70%) लड़कियां थीं। 6 से 13 वर्ष के आयु वर्ग के प्रतिभागियों की संख्या 285 (52.77%) थी। उनकी अधिकांश माताएँ 313 (57.96%) निरक्षर थीं और शेष 227 (42.04%) ने प्राथमिक स्तर तक शिक्षित थीं। सड़क पर रहने वाले अधिकांश 456 (84.44%), बच्चे निम्न सामाजिक-आर्थिक स्थिति के थे जिनकी मासिक प्रति व्यक्ति आय 942 रुपये थी। अधिकांश 338 (62.59%) बच्चे विशेष रूप से स्तनपान नहीं कर रहे थे। 540 स्ट्रीट में केवल 128 बच्चों (23.70%) ने स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता दिखाई और 162 (30%) में पोषण संबंधी जागरूकता थी। उनमें से 189 (35%) मादक द्रव्यों के सेवन में लिप्त थे। बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति का आकलन एंथ्रोपोमेट्री, नैदानिक परीक्षा, आहार सर्वेक्षण और जैव रासायनिक आकलन द्वारा किया गया था। 6 वर्ष से 13 वर्ष तक के आयु वर्ग में अल्प-पोषण प्रचलित था। नेत्रश्लेष्म सूखापन (36.29%), कोणीय स्टामाटाइटिस (57.77%), दंत क्षय (55.18%), मसूड़ों से खून बह रहा (57.77%), त्वचा संक्रमण (56.66%), कमजोरी (63.14%), पीला नेत्रश्लेष्मला और पीला नाखून (40.92) उनमें से कोइलोनीचिया (52.96%) और बालों में रंग परिवर्तन (60.00%) पाए गए। लड़कों की तुलना में लड़कियों में प्रोटीन की कमी, कैलोरी की कमी और एनीमिया अधिक प्रचलित थे (p<0-0001)। इस खराब स्थिति को सुधारने के लिए उनके लिए विभिन्न स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम विकसित किए जाने चाहिए।

मुख्य शब्द – सड़क, बच्चे, स्वास्थ्य

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना

दुनिया के अधिकांश शहरी केंद्रों में स्ट्रीट चिल्ड्रेन हाशिए पर रहने वाली आबादी का गठन करते हैं। शहरी क्षेत्रों में सड़क पर रहने वाले बच्चों की सही संख्या का अनुमान लगाना मुश्किल है और साथ ही उनके द्वारा अनुभव की जाने वाली समस्याओं की भयावहता का भी। संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया कि दुनिया में सड़क पर रहने वाले बच्चों की आबादी लगभग 100 मिलियन है, जो लगातार संख्या में बढ़ रही है।

यूनिसेफ ने एक सड़क पर रहने वाले बच्चे को परिभाषित किया है, कोई भी लड़की या लड़का, जिसके लिए गली उसका अभ्यस्त निवास और आजीविका का स्रोत बन गई है और जो जिम्मेदार वयस्कों द्वारा अपर्याप्त रूप से संरक्षित, पर्यवेक्षण या निर्देशित है।

गली के बच्चे दो प्रकार के होते हैं पहला गली के बच्चे वे होते हैं जो गलियों में रहते हैं, गली उनका घर है, जबकि दूसरा गली के बच्चे वे बच्चे हैं जो गली में एक दोपहर या सुबह या सप्ताह में कम से कम एक दिन सड़क पर बिताते हैं।

भारत में सड़क पर रहने वाले बच्चों की सही संख्या के बारे में कोई विश्वसनीय डेटा नहीं है क्योंकि उनके तैरते (अक्सर चलते-फिरते) स्वभाव हैं। हालांकि, भारतीय दूतावास ने अनुमान लगाया है कि बॉम्बे, मध्य प्रदेश, मद्रास, कानपुर, और उत्तर प्रदेश जैसे महानगरों में 314,700 स्ट्रीट चिल्ड्रन हैं और दिल्ली में लगभग 100,000 हैं।

सड़क पर रहने वाले बच्चे क्रूर हिंसा, यौन शोषण, उपेक्षा, नशीली दवाओं की लत और मानवाधिकारों के उल्लंघन के शिकार हैं। स्ट्रीट बच्चे न केवल कम वजन के होते हैं, बल्कि उनकी वृद्धि अक्सर अवरुद्ध हो जाती है, कई लोग विटामिन ए की कमी, टीबी, कुष्ठ, टाइफाइड, मलेरिया और प्रणालीगत बीमारियों जैसी पुरानी बीमारियों से पीड़ित होते हैं, क्योंकि वे खराब स्वच्छता के कारण होते हैं।

कई जटिल परिस्थितियां आमतौर पर युवाओं को सड़क पर पलायन करने के लिए प्रेरित करती हैं, कभी-कभी अपने घरों से दूर। सड़क पर जीवन का महत्वपूर्ण कारण पारिवारिक खराब सामाजिक आर्थिक स्थिति है, जो कई बच्चों और युवाओं को अपने परिवारों को पैसा कमाने में मदद करने के लिए सड़क पर काम की तलाश करने के लिए मजबूर करता है। सड़क की परिस्थितियों में युवा अक्सर क्षणिक होते हैं और अकुशल कार्य करते हैं।

स्ट्रीट बच्चे अक्सर भेदभाव के विभिन्न रूपों से पीड़ित होते हैं, जिससे सामाजिक भेद्यता और बढ़ जाती है, इस प्रकार पदार्थ और नशीली दवाओं के उपयोग और यौन जोखिम वाले व्यवहार में लिप्त हो जाते हैं, जिससे वे एचआईवी / एड्स के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं। सड़क पर रहने वाले बच्चों में मादक द्रव्यों का सेवन व्यापक है। स्ट्रीट चिल्ड्रेन द्वारा उपयोग किए जाने वाले सबसे आम पदार्थ इनहेलेंट, अल्कोहल, मारिजुआना, कोकीन, कोका पेस्ट, वैलियम और रोहिप्नोल हैं।

मादक द्रव्यों के सेवन से तात्पर्य शराब और अवैध दवाओं सहित मनो-सक्रिय पदार्थों के हानिकारक या खतरनाक उपयोग से है

स्ट्रीट चिल्ड्रन की अवधारणा

स्ट्रीट चिल्ड्रन वे बच्चे हैं, जिन्होंने कई सामाजिक-आर्थिक कारणों से खुद को किसी शहर या शहर की सड़कों पर रहते हुए पाया है। स्ट्रीट चिल्ड्रेन को परिभाषित करने के कई तरीके हैं; हालांकि, कई व्यवसायी और नीति निर्माता अठारह वर्ष से कम उम्र के लड़कों और लड़कियों के सड़क पर रहने वाले बच्चों की यूनिसेफ की अवधारणा का उपयोग करते हैं, जिनके लिए सड़क घर और उनकी आजीविका का स्रोत बन गई है, और जो अपर्याप्त रूप से संरक्षित या पर्यवेक्षित हैं।

कुछ सड़क के बच्चे, विशेष रूप से अधिक विकसित देशों में, फेंकने वाले बच्चे नामक एक उपश्रेणी का हिस्सा हैं, जिन्हें घर छोड़ने के लिए मजबूर किया गया है। फेंके गए बच्चों के एकल-माता-पिता के घरों से आने की संभावना अधिक होती है। स्ट्रीट चिल्ड्रेन अक्सर दुर्व्यवहार, उपेक्षा और शोषण के अधीन होते हैं, या, चरम मामलों में, क्लीन-अप स्क्वॉड द्वारा हत्या, जिन्हें स्थानीय व्यवसायों या पुलिस द्वारा काम पर रखा गया है।

भारत दुनिया का सातवां सबसे बड़ा और दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। तेजी से आर्थिक विकास के कारण, एक आर्थिक दरार सामने आई है, जिसमें बत्तीस प्रतिशत से अधिक आबादी गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन कर रही है। बेरोजगारी, बढ़ते ग्रामीण-शहरी प्रवास, शहर के जीवन का आकर्षण और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी के कारण, भारत ने दुनिया में विशाल बाल श्रम बलों का विकास किया है, नई दिल्ली के प्रत्येक शहर में अनुमानित दस लाख या अधिक सड़क पर रहने वाले बच्चे हैं।

समग्र रूप से भारत पर विचार करने पर, ग्यारह मिलियन से अधिक बच्चे हैं जो शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों पर अपना जीवन यापन करते हैं, जो मुख्य रूप से पुरुष हैं, उनकी औसत आयु चौदह वर्ष है।

स्ट्रीट चिल्ड्रन के प्रकार

संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष (यूनिसेफ) के अनुसार सड़क पर रहने वाले बच्चों को वर्गीकृत किया जा सकता है-

- गली में रहने वाले बच्चे - वे बच्चे जो अपने परिवार से दूर भाग कर सड़कों पर अकेले रहते हैं।
- सड़क पर काम करने वाले बच्चे - वे बच्चे जो अपना अधिकांश समय सड़कों पर बिताते हैं लेकिन नियमित रूप से घर लौटते हैं।
- गली के परिवारों के बच्चे - परिवारों के साथ सड़कों पर रहने वाले बच्चे।

दूसरी ओर, स्ट्रीट चिल्ड्रेन पर एक प्रमुख शोधकर्ता मार्क डब्ल्यू लुस्क ने अपने शोध से सड़क पर बच्चों की चार श्रेणियां विकसित की हैं-

- बच्चे जो सड़क पर काम करते हैं लेकिन रात में अपने परिवार के पास लौट जाते हैं
- बच्चे जो सड़क पर काम करते हैं लेकिन जिनके पारिवारिक संबंध कम होते जा रहे हैं
- बच्चे जो काम करते हैं और सड़क पर अकेले रहते हैं और
- बच्चे जो सड़क पर अपने परिवार के साथ रहते और काम करते हैं

शब्द "स्ट्रीट चाइल्ड" हमारे अध्ययन में केवल अंतिम समूह को संदर्भित करने के लिए आया है। जबकि भारत की सड़कों पर 18 मिलियन बच्चे काम करते हैं, ऐसा अनुमान है कि उनमें से केवल 5-20 प्रतिशत ही वास्तव में बेघर हैं और अपने परिवारों से अलग हो गए हैं।

चूंकि भारत में सड़क पर रहने वाले बच्चों में अद्वितीय कमजोरियां होती हैं जैसे कि वे सड़क पर जितना समय बिताते हैं, सड़क पर निर्भर उनकी आजीविका और वयस्कों से उनकी सुरक्षा और देखभाल की कमी होती है, इसलिए, वे भारतीय आबादी का एक उप-समूह हैं उनमें से जो योग्य हैं यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया जाता है कि उनकी जरूरतों को जाना जाये।

सड़क पर रहने वाले बच्चों के तैरते चरित्र के कारण उनके बारे में सटीक डेटा प्राप्त करना मुश्किल है। उनके पास आमतौर पर पहचान का कोई प्रमाण नहीं होता है और वे अक्सर घूमते रहते हैं। भारत में 50,000 लोगों में से जिन्हें आधिकारिक तौर पर सालाना घर छोड़ने की सूचना दी जाती है, 45 प्रतिशत सोलह वर्ष से कम आयु के हैं। विभिन्न अध्ययनों ने कुछ शहरों के अनुमान तैयार किए हैं।

वर्तमान में एनजीओ और सरकारी चाइल्ड लाइन मिलकर 80,000 में से केवल 10,000 बच्चों की मदद कर रहे हैं जो हर साल प्लेटफॉर्म पर आते हैं। बाकी 70,000 लोग प्लेटफॉर्म या सड़क पर चलते रहते हैं और इस तरह सड़क पर रहने वाले बच्चों की संख्या में इजाफा करते हैं। यह हर साल का जोड़ है।

उद्देश्य

1. स्ट्रीट चिल्ड्रन की अवधारणा के अध्ययन के लिए
2. सड़क पर रहने वाले बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति के अध्ययन के लिए

अनुसूची का प्रयोग करते हुए मुख्यतः दो प्रकार के आँकड़े एकत्रित किए गए -

मात्रात्मक और गुणात्मक

मात्रात्मक डेटा में सामाजिक-जनसांख्यिकीय और सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं, आहार संबंधी जानकारी और वजन और ऊंचाई/लंबाई जैसे मानवमितीय माप शामिल हैं।

गुणात्मक डेटा में पोषण संबंधी जागरूकता और स्वास्थ्य जागरूकता शामिल है।

बच्चों की पोषण स्थिति का आकलन दो विधियों द्वारा किया गया था। प्रत्यक्ष विधि (एंथ्रोपोमेट्री, नैदानिक परीक्षा, और प्रयोगशाला या जैव रासायनिक आकलन) और अप्रत्यक्ष विधि (आहार मूल्यांकन)।

आहार सर्वेक्षण

एक आहार सर्वेक्षण विशिष्ट उपभोग किए गए भोजन और अनुमानित पोषक तत्वों के सेवन के आहार सेवन पैटर्न के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसलिए, आहार स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। बच्चों के आहार सेवन के संबंध में जानकारी एकत्र की गई-

- 24 घंटे याद करने की विधि
- खाद्य आवृत्ति प्रश्नावली
- फास्ट फूड सेवन का दस्तावेजीकरण

बच्चों के आहार सेवन के संबंध में उनकी माताओं से 24 घंटे की रिकॉल विधि के माध्यम से जानकारी एकत्र की गई। आहार सर्वेक्षण की इस पद्धति को विशेष रूप से इसलिए चुना गया क्योंकि:

- यह पिछले 24 घंटों में बच्चे द्वारा खाए गए सभी खाद्य पदार्थों और पेय पदार्थों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए एक संरचित साक्षात्कार था।
- यह बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण के लिए उपयुक्त था।
- कम समय में बड़ी संख्या में विषयों को कवर किया जा सकता है

बच्चों के आहार सर्वेक्षण के दौरान आहार सामग्री (जैसे मानक कप, चम्मच, कटोरे आदि) का उपयोग किया गया था, जो भागों के आकार की पहचान करने में सहायता करते हैं।

मानवमितीय मापन के पश्चात नैदानिक परीक्षण, आहार सर्वेक्षण एवं जैव-रासायनिक आकलन, पोषण जागरूकता एवं स्वास्थ्य चेतना का मूल्यांकन प्रत्येक समूह में बीस प्रश्न पूछकर किया गया। उनके द्वारा दिए गए उत्तरों को सही उत्तर के लिए 1 और गलत उत्तर के लिए 0 मानकर स्कोर किया गया।

परिणाम और व्याख्या का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या का अध्ययन किया गया है। इसे दो खंडों में पूरा किया गया है। विश्लेषण का पहला खंड उत्तरदाताओं के वर्णनात्मक आँकड़े (n=540) उनकी जनसांख्यिकीय विशेषताओं के संदर्भ में प्रस्तुत करता है। विश्लेषण का दूसरा खंड टी-टेस्ट, एनोवा, ची-स्क्वायर और सहसंबंध विश्लेषण सहित अनुमानित आंकड़ों से संबंधित है। स्वास्थ्य जागरूकता और सड़क पर रहने वाले बच्चों की पोषण संबंधी जागरूकता के संबंध में पोषक तत्वों की कमी के लक्षणों के बीच अंतर के महत्व का पता लगाने के लिए यहां टी-परीक्षण किए गए। इन बच्चों के पोषण स्थिति संकेतकों और आयु समूहों के बीच संबंध का पता लगाने के लिए विचरण (एकतरफा एनोवा) का एकतरफा विश्लेषण किया गया था। जनसांख्यिकीय कारकों और सड़क पर रहने वाले बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति के बीच संबंध का परीक्षण करने के लिए, ची-स्क्वायर विश्लेषण की गणना की गई। अंत में, जनसांख्यिकीय चर के कारकों और बच्चों की पोषण स्थिति के बीच एक सहसंबंध (पियर्सन आर) किया गया था। दूसरे खंड में, सड़क पर रहने वाले बच्चों की पोषण स्थिति का आकलन चार तरीकों से किया गया था। विभिन्न चार उप-वर्गों में मानवमितीय मापन, नैदानिक परीक्षा, जैव-रासायनिक परीक्षण और आहार गणना।

निष्कर्ष

"स्ट्रीट चिल्ड्रन" गरीबी, पारिवारिक समस्याओं और शहरीकरण के कारण किसी शहर या कस्बे की सड़कों पर रहने वाले बेघर होने का अनुभव करने वाले बच्चों के लिए एक शब्द है। वे अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित हैं। उनके लिए गरीबी चक्र को अपर्याप्त भोजन, कपड़े और आश्रय के रूप में प्लॉट किया जा सकता है, साथ ही चिकित्सा देखभाल की कमी, स्वास्थ्य जागरूकता और पोषण संबंधी जागरूकता का सड़क पर रहने और काम करने वाले बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, खासकर छोटे बच्चे जो नीचे हैं 13 साल की उम्र। उन्हें स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने का अधिक जोखिम होता है क्योंकि उनकी कम उम्र उनकी भेद्यता को बढ़ाती है।

संदर्भ सूची

1. बेनिटेज़, एस. (2007), "स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड्स स्ट्रीट चिल्ड्रेन वायलेंस रिपोर्ट, कंसोर्टियम फ़ॉर स्ट्रीट चिल्ड्रन (यूके), 30 नवंबर, 2012 को पुनः प्राप्त।

2. एवगेनिया, एस. (1997), "स्ट्रीट चिल्ड्रेन का शिकार और दुर्व्यवहार" वर्ल्डवाइड, यूथ एडवोकेट प्रोग्राम इंटरनेशनल रिसोर्स पेपर, 30 नवंबर 2012 को लिया गया।

3. यूनिसेफ - प्रेस सेंटर - ब्रिटिश एयरवेज के कर्मचारी काहिरा में स्ट्रीट चिल्ड्रेन सेंटरों का दौरा करते हैं" www.unicef.org पर उपलब्ध है, 5 फरवरी 2008 को पुनः प्राप्त।

4. बेनिटेज़, एस. (2007), स्टेट ऑफ़ द वर्ल्ड्स स्ट्रीट चिल्ड्रेन: वायलेंस, स्ट्रीट चिल्ड्रन सीरीज़, कंसोर्टियम फ़ॉर स्ट्रीट चिल्ड्रेन (यूके), 30 नवंबर 2012 को पुनः प्राप्त।

5. गरीबी और इक्विटी, डेटा बैंक, एन.पी., एन.डी. से उपलब्ध है। वेब। 1 जुलाई 2013<http://povertydata.worldbank.org/poverty/Country/IND>

6. माथुर, ए. (2013), डिफिकल्टीज एंड प्रॉब्लम्स ऑफ स्ट्रीट चिल्ड्रेन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च, 5 (2): pp. 1859-186।

7. सुमन, वी. और सरस्वती, टी.एस. (2002), "भारत में किशोरावस्था: स्ट्रीट अर्चिन्स या सिलिकॉन वैली करोड़पति? , कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस: pp. 105-140।

8. निकोला, ए। (2005)। बच्चे, युवा और विकास। विकास पर रूटलेज परिप्रेक्ष्य, मनोविज्ञान प्रेस 205।

9. आप्टेकर, एल. (1994), स्ट्रीट चिल्ड्रन इन डेवलपिंग वर्ल्ड ए रिव्यू ऑफ देयर कंडीशन, क्रॉस-कल्चरल रिसोर्सेज। 28 (3): pp. 195-244।

10. कोम्बराकरण, एफ.ए. (2004), स्ट्रीट चिल्ड्रन ऑफ़ बॉम्बे: देयर स्ट्रेस एंड स्ट्रैटेजी ऑफ़ कोपिंग, चिल्ड्रन एंड यूथ सर्विसेज रिव्यू, 26(9): pp. 853-871।

11. पैन्टर-ब्रिक, सी. (2002), स्ट्रीट चिल्ड्रेन, ह्यूमन राइट्स एंड पब्लिक हेल्थ ए क्रिटिक एंड फारवर्ड डायरेक्शन्स, एनुअल रिव्यू ऑफ एंथ्रोपोलॉजी, 31: pp. 147-171।

12. पटेल, एस. (1990), स्ट्रीट चिल्ड्रेन, होटल बॉयज़ एंड चिल्ड्रन ऑफ़ फुटपाथ में रहने वाले और निर्माण श्रमिक - बॉम्बे में वे अपनी दैनिक ज़रूरतों को कैसे पूरा करते हैं, पर्यावरण और शहरीकरण। 2 (2): pp. 9-26।

Corresponding Author

Dr. (Smt.) Anita Singh*

Principal, KMV Inter College, Sewapuri, Varanasi (UP)

www.ignited.in